YOUNG RESEARCHER
Estd. 2012

Young Researcher
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2277-7911 | Impact Factor – 7.025| Website: https://yra.ijaar.co.in/
Volume-15, Issue-1 | January – February – March 2026

Original Article

'सीता' उपन्यास में आदिवासी स्त्री विमर्श

प्रा. डॉ. संगीता विष्णु भोसले
वसुंधरा कला महाविद्यालय,
जुळे सोलापुर, सोलापुर (महाराष्ट्र)

Manuscript ID:
yrj-150110

ISSN: 2277-7911
Impact Factor – 7.025

Volume 15
Issue 1
Jan-Feb-Mar.- 2026
Pp. 67 – 71

Submitted: 12 Jan. 2026
Revised: 25 Jan. 2026
Accepted: 10 Feb. 2026
Published: 10 Mar. 2026

Corresponding Author:
प्रा. डॉ. संगीता विष्णु भोसले

Quick Response Code:

Web. https://yra.ijaar.co.in/

DOI:
10.5281/zenodo.22079461

DOI Link:
https://doi.org/10.5281/zenodo.22079461

प्रस्तावना:

हिंदी साहित्य में 20 वीं सदी के छठे दशक स छत्रपति शाहू महाराज, म. ज्योतिराव फुले, डॉ. अम्बेडकर जी से प्रेरणा लेकर उपेक्षित जनसमुदाय का चित्रण किया जा रहा है। जिससे साहित्य में वैचारिक कांति निर्माण हुयी। साहित्य में दलित, किसान, किन्नर, स्त्री, युवा, बाल, वृध्द, आदिवासी आदि की व्यथा-कथा का यथाथ 'चित्रण हो रहा है। मानव सभ्यता के विकास का पहला सोपान आदिवासी समाज है। विज्ञानवादी युग में मानव समाज और सभ्यता के उत्क्रांति को लेकर संशोधन किया जा रहा है। आदिवासी जनजाति के संदर्भ स्मृति ग्रंथों में मिलते है। संविधानिक अधिकार प्राप्ति के बाद कर्ण, एकलव्य, शंबूक तथा शबर, किरात, निषाद, रवश, पुलिंद आदि जनजातियो पर हुए अन्याय की कारण मिमांसा की जा रही है। म. फुले जी तत्रैव में आदिवासी जीवन का चित्रण करते हुए कहते है, 'गौड भिल्ल क्षेत्री होते मूळ धन, इराणी मागून आले येणे। शूर मिल्ल कोळी शरा ने तोडीले, हाकलून दिले रानीवासी।।'

भारतीय समाज व्यवस्था में आदिवासी समाज और उनकी संस्कृति प्राचीन है। सैकड़ों वर्षों से आदिवासी सगाज आधुनिक समाज और संस्कृति से दूर प्राकृतिक जीवनयापन कर रहा है। तंत्रज्ञान के युग से अलिप्त प्राकृतिक जीवन में आस्था रखने वाले आदिवासी समाज और सस्कृति का चित्रण हिंदी उपन्यासों में हो रहा है। जिसमें जगनाथप्रसाद चतुर्वेदी (वसंत मालती), आयोध्यासिंह उपाध्याय (अधखिला फुल), वृंदावनलाल वर्मा (कचनार), देवेंद्र सत्यार्थी (रथ के पहिये), रांगेय राघव (कब तक पुकारू), राजेंद्र अवस्थी (जगल के फुल, सूरजकिरण की छाँव), संजीव (पाँव तले की दूब, जंगल जहाँ शुरू होता है), वाल्टा भेंगरा (सुबह की श्याम), पीटरपाल एक्का (जंगल के गीत), योगेंद्र सिन्हा (वनलक्ष्मी), उदयशंकर भट्ट (सागर लहरें और मनुष्य), राकेश वत्स (जंगल के आसपास), भगवानदास मोरवाल (नरक मसीहा, रेत, काला पत्थर), मैत्रेयी पुष्पा (अल्मा कबूतरी), हरिराम मीणा (पूणी तपे तीर) आदि उल्लेखनीय हैं। इस श्रंखला से जुडकर रमणिका गुप्ता ने सीता एवं मौसी उपन्यास के द्वारा आदिवासी साहित्य को समृध्द किया है। आदिवासी समाज की यह विशेषता है कि इस समाज

में स्त्री को पुरूषों के समान सभी अधिकार प्राप्त है। लेकिन आधुनिक संस्कृति के प्रभाव से आदिवासी समाज में भी स्त्रियों का शोषण हो रहा है।

Creative Commons

OPEN ACCESS

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:

प्रा. डॉ. संगीता विष्णु भोसले (2026). 'सीता' उपन्यास में आदिवासी स्त्री विमर्श. Young Researcher, 15(1), 67 – 71.
https://doi.org/10.5281/zenodo.22079461

आदिवासी समाज की अवधारणा:

'आदिवासी' शब्द की व्युत्पत्ति और परिभाषा को लेकर विद्वानों के विचारा में साम्यता दिखाई देती है। 'आदिवासी' शब्द की व्युत्पत्ति 'आदि और वासी' शब्द के योग से हुयी है। 'आदि' शब्द का अर्थ है प्रारंभ. मूल, आदि, पहला। 'वासी' शब्द का अर्थ है वास (निवास) करने वाला। अतः आदिवासी शब्द का अर्थ 'मूलनिवासी' है। आदिवासी शब्द के लिए अंग्रेजी भाषा में Aboriginal. Savage Primitive शब्दों का प्रयोग किया जाता है। हिंदी भाषा में आदिवासी तथा वनवासी शब्द प्रचलित है। मराठी भाषा में आदिवासी शब्द का प्रयोग किया जाता है। संविधान के धारा 342 में श्येडूल ट्राइब (Shedule Tribe) शब्द मिलता है। विभिन्न विद्वानों ने आदिवासी शब्द को पारिभाषित किया है:

1. लक्ष्मणशास्त्री जोशी आदिवासी शब्द का अर्थ बताते हुए कहते है, "नागर संस्कृति से काफी दूर तथा अलिप्त रहे सम्बध्द प्रदेश के मूलनिवासी आदिवासी है।"[1]
2. डॉ. रमेश सूर्यवंशी के अनुसार, "पर्वतों के आसपास दिखाई देने वाले, पिछडे हुए, दुर्लक्षित, उपेक्षित ऐसी ये आदिवासी जनजाति हैं।"[2]
3. डॉ. विनायक तुमराव कहते है, "आदिवासी साहित्य अन्य किसी भी साहित्य की प्रतिकृति नहीं है। वह तो स्वतंत्र, स्वयंभू एवं स्वयंसिध्द है। इन की प्रेरणा उनके अस्तित्व की तरह ही प्राचीन तथा पृथक है।"[3]
4. रमणिका गुप्ता कहती है कि बिना जंगल, जमीन, अपनीभाषा, जीवन शैली, मूल्यों के बिना आदिवासी आदिवासी नहीं रह सकता। आदिवासी इस प्रदेश का मूलनिवासी है।
5. डॉ. मुजुमदार के अनुसार, "आदिवासी एक सामान्य नाम वाला परिवारों का संगठन या परिवारों का समूह होता है, जिसके सदस्य एक ही क्षेत्र में रहते हैं. एक ही भाषा बोलते हैं और विवाह-व्यवसाय के पेशे से संबंधित कुछ निषधों का पालन करते हुएजिन्होंने आदान-प्रदान संबंधि तथा पारस्पारिक कर्तव्य विषयक निश्चित व्यवरणा का विकास किया है।"[4]
6. डब्ल्यु ले. पेरि के अनुसार, "समान बोली भाषा बोलने वाले तथा एक ही समान भूप्रदेश पर निवास करन वाले समूह को आदिवासी कहते है।"[5]

7. डॉ. रिव्हर्स कहत है, “यह एक साधारण प्रकार का समूह है जो सामान्य बोली भाषा बोलते है। युध्द जैसे लक्ष्य हेतु एक होकर लडते है।"[6]

उपर्युक्त परिभाषाओं से आदिवासी जनजाति का स्वरूप स्पष्ट हो जाता है:

1. आदिवासी सम्बध्द भूप्रदेश के निवासी है।
2. आदिवासी संस्कृति प्रकृति पर आधारित है।
3. आदिवासियों में शादी-ब्याह एवं व्यवसाय संबंधि समान निषेध-नियमों का पालन किया जाता है।
4. आदिवासियों की एक ही बोलीभाषा होती है।
5. आदिवासियों के जीवन का अविभाज्य घटक जल, जंगल, जमीन है।
6. आदिवासी एक ही अनुशासनबध्द व्यवस्था प्रणाली का पालन करते है।
7. आदिवासियों की अपनी मूल संस्कृति है।
8. आदिवासियों में नैतिकता, मान्यताओं और विश्वास की प्रासंगिकता है।
9. आदिवासी साहित्य की प्रेरणा प्राचीन और पृथक है।
10. आदिवासियों की जीवन शैली पर प्रकृति का प्रभाव है।
11. आदिवासी समाज में धर्म प्रकृति केंद्रित है।
12. आदिवासियों में ‘मैं’ के स्थान पर ‘हम’ को महत्व है।

'सीता' उपन्यास में आदिवासी स्त्री जीवन:

स्त्रीवादी उपन्यासकार रमणिका गुप्ता के साहित्य का केंद्र दलित और स्त्री जीवन है। उनका सीता उपन्यास सन 1996 म अनुराग प्रकाशन से प्रकाशित हुआ है। भारतीय संस्कृति का संवर्धन और अर्जन करने वाली स्त्री प्रत्येक समाज, वर्ग, जाति, धर्म, स्तर पर शोषण का शिकार है। रमणिका गुप्ता ने सीता उपन्यास में आदिवासी मजदूर स्त्री के कष्टप्रद एवं संघर्षमय जीवन का चित्रण किया है।

उपन्यास की नायिका सीता का व्यक्तित्व पौराणिक सीता से पूर्णता अलग है। वह आत्मनिर्भर, स्पष्टवादी, अन्याय का विरोध करने वाली, चेतनायुक्त, निडर स्त्री है। सीता आदिवासी मजदूर स्त्रियों का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्हें न्याय देती है। उसका अपना जीवन अनेक दुखों और वेदनाओं से भरा है। आदिवासी समाज में स्त्री-पुरुष समानता का भाव है। “यहाँ की स्त्रियों की अपने व्यवहार में पुरुषों के साथ समान सहभागिता दिखाई देती है।“[7] लेकिन संस्कृतिकरण के कारण आदिवासी स्त्री भी शोषण का शिकार हुयी है। सीता अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए केदला खदान में मजदूरी करती है। उसका पति शराबी होने के कारण परिवार की जिम्मेदारी अकेली सीता पर है। वह अर्थाभाव में पति के हिस्से का काम करके अर्थाजन करती है। अपनी बेटी को पीठ पर बाँधकर मजदूरी करने वाली सीता परिस्थिति से भागती नहीं है। भारतीय स्त्री का जीवन संघर्षमय रहा है। उसे अपने अस्तित्व, अस्मिता, अर्थार्थाजन, शिक्षा के लिए संघर्ष करना पड़ा है। आदिवासी समाज में बहुपतित्व और बहुपत्नीत्व की प्रथा है। सीता का पति दूसरा विवाह करके भाग जाता है। परंतु सीता टूटती नहीं है। गजदूर संगठन का प्रतिनिधित्व करते हुए उनके हक-अधिकार के लिए लडती है। खदान में ट्रक लदवाने के लिए आए हुए

मैंनेजर से कहती है, “चल भडुए ऑफीस में बैठ जाके। दखल दिया तो मुंडी काट लेंगे। हमर पेट पर लात मत मार, नहीं तो रोवे वाला भी न मिले।“[8] स्वार्थवश संगठन का साथ न देने वाले बहाली मजदूरों को खरीखोटी सुनाती है।

पति के जाने के बाद बिरादरी का विरोध सहकर यासिन के साथ शादी करती है। “भारतीय संस्कृति से बिल्कूल विपरित आदिवासी स्त्री को अपना वर खुद चुनने की इजाजत है। इसके लिए न तो वह दंडित होती है, न ही दोषी करार दी जाती है।“[9] यासिन भी उसे धोका देकर दूसरी शादी करता है। स्त्री को उपभोग की वस्तु समझने वाली गानसिकता ने स्त्री के जीवन को नरक बना दिया है। यासिन सीता के मेहनत की कमाई छिनकर उसके साथ हिंसा करता है। यासिन और उसकी दूसरी पत्नी सीता और उसके बेटे को जहर देकर मारना चाहते थे। यह बात पता चलने पर सीता त्याग और क्षमाशीलता की मूर्ति बनकर चूप नहीं रहती। यासिन भगवान राम का हवाला देकर माफी माँगता है। यासिन की दोगली नियती को कोसते हुए सीता कहती है, “राम जी तो दूसरा ब्याह नाय करले है। हम उन सीता जी नाय है, जो वन में चले जायब। हम तो एही साले को बन में भेज देबा।"[10] वर्तमान स्त्री अन्याय का प्रतिकार करने वाली है। सीता का पुरुष जाति पर से विश्वास उठ जाता है। “पति से न पटने पर उसे छोडने का अधिकार भी उन्हें (आदिवासी स्त्री) प्राप्त है।“[11] अब सीता केवल अपने बच्चों की माता बनकर रहना पसंद करती है। इसलिए भगीरथ के द्वारा रखनी शब्द सुनकर आगबबुला हो जाती है। उसके दुःचरित्र का पर्दापाश करती है। अपने कर्तव्य और जिम्मेदारी पर ध्यान केंद्रित करते हुए संगठन में अपना वजूद निर्माण करती है। अन्यायकारी को ईमानदारी खलती है। सीता पर अनेक निर्बंध डालने की कोशिश की जाती है। लेकिन सीता निडर बनकर समस्याओं का सामना करती है।

ठेकेदार और मैनेजर खदान में काम करनेवाली स्त्रियों का आर्थिक और शारीरिक शोषण करते है। इन स्त्रियों को पेट की भूख ने इतना कमजोर बनाया है कि शोषण को नियती मानकर सहन करने के लिए अभिशप्त है। आदिवासी स्त्रियाँ शारीरिक शोषण को प्राकृतिक मानती है। सीता ऐसी स्त्रियों को अपने अस्तित्व और अस्मिता के प्रति जागृत करते हुए विद्रोह के लिए संगठित करती है। उसे विश्वास है कि सभी स्त्रियाँ इस श्रृंखला से जुड जायेगी तो उनका शोषण करने की किसी में हिंम्मत नहीं होगी। उन्हें मनुष्य होने के अधिकार प्राप्त हो जायेंगे। सीता का संघर्ष उस पुरूष मानसिकता से है जो स्त्री पर पुरुषत्व का अधिकार जमाकर उन्हें गुलाम बनाकर रखना चाहते हैं। स्त्री को उपभोग की वस्तु मानते है। सीता संघर्ष के द्वारा आदिवासी स्त्री मजदूरों को उनका हक दिलवाती है।

आधुनिक संस्कृति और मूल संस्कृति ने एक दूसरे को प्रभावित किया है। संस्कृतिकरण से आदिवासी समाज में स्त्री शोषण की समस्या निर्माण हुयी है। “इस मूल निवासियों ने मुख्यधारा के लोगों की विकृतियों तो ग्रहण कर ली, जिससे उनकी सीधी-सादी संस्कृति अप्रासंगिक होती गयी।"[12]

निष्कर्ष:

रमणिका गुप्ता ने सीता उपन्यास में आदिवासी स्त्री की पति के द्वारा उपेक्षित स्त्री, पीडित स्त्री, स्त्री का शारीरिक-मानसिक-भावनिक-आर्थिक सामाजिक शोषण,

अशिक्षा, सामाजिक बहिष्कार आदि समस्याओं पर प्रकाश डाला है। सीता के द्वारा चेतना से संपृक्त, निडर, आत्मनिर्भर, परिश्रमी, अन्याय का विरोध करने वाली, संगठन और संघर्ष पर विश्वास रखने वाली, आशावादी स्त्री का चित्रण किया है। आधुनिकीकरण से आदिवासी समाज की जीवनशैली में परिवर्तन हुआ है।

संदर्भ सूची:

1. लक्ष्मणशास्त्री जोशी - मराठी विश्वकोश, भाग 2, पृष्ठ 28
2. डॉ. रमेश सूर्यवंशी-आदिवासी ठाकर, पृष्ठ 09
3. डॉ. विनायक तुमराव- मराठी वाडमय का इतिहास, खंड 7, भाग 9
4. डॉ. डी.एन. मुजुमदार- रेसेस कल्चर ऑफ इंडिया, पृष्ठ 25
5. डॉ. बापूराव देसाई- आदिवासी साहित्यः विधा, शास्त्र, इतिहास, पृष्ठ 21
6. हरिश्चंद्र उप्रेती-भारतीय जनजातियाँ: संरचना एवं विकास, पृष्ठ 01
7. डॉ. रामदयाल- मुंडा आदिवासी अस्तित्व और झारखंडी अस्मिता के सवाल, पष्ठ 32
8. रमणिका गुप्ता- सीता, पृष्ठ 45
9. रमणिका गुप्ता- आदिवासी अस्मिता का संकट, पष्ठ 75
10. रमणिका गुप्ता- सीता, पृष्ठ 59-60
11. रमणिका गुप्ता- आदिवासी अस्मिता का संकट, पृष्ठ 75
12. वही, पृष्ठ 52